शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

वैष्णव-दर्शन और भारतीय आशावाद के रूमानी कवि - डॉ. धर्मवीर भारती

डॉ. राजेश दीक्षित (प्राचार्य)
रेनेसां कॉलेज ऑफ़ कॉमर्स एंड मैनेजमेंट
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

डॉ.धर्मवीर भारती रूमानी और मांसल अनुभूतियों के कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनके काव्य में एन्द्रिय सुखों और भौतिकता की ही अभिव्यंजना ज्यादा दिखलाई देती है। उनका काव्य 'स्थगित वयः संधि' का काव्य होकर रह गया है और इस काव्य में ऐसा तत्व पर्याप्त मात्रा में उपस्थिति है, जिसे मनोविज्ञान के अनुसार पुनरावृत्ति बाध्यता कहा जाता है। इस पुनरावृत्ति बाध्यता के मूल में व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले वे संस्कार हैं, जिन्होंने इनके व्यक्तित्व को बड़ी दूर तक प्रभावित किया है। किन्तु यह भी सत्य है कि इस पुनरावृत्ति बाध्यता और 'स्थगित वयः सन्धि' ने भारती के काव्य को मांसलता एवं दैहिक अनुभूतियों का प्रामाणिक काव्य बना दिया है। प्रस्तुत शोध पत्र में डॉ.धर्मवीर भारती के वैष्णव दर्शन और भारतीय आशावाद से समन्वित रचनाकर्म पर विचार किया गया है।

भूमिका

डॉ.धर्मवीर भारती के काव्य में सर्वत्र रूमानियत दिखलाई देती है। उर्दू शब्द के व मांसल प्रतीकों के कारण और अधिक उभर कर सामने आई है। भारती जी के सम्बन्ध में यह प्रसिद्ध है कि "उनका जन्म कुम्भ राशि और घनिष्ठा नक्षत्र से सम्बन्धित है। ज्योतिष के अनुसार उक्त राशि-नक्षत्रों का योग जिस व्यक्ति के जन्म के साथ होता है, उस व्यक्ति के जीवन में प्रेम और काम का संघर्ष हुआ करता है।" भारती जी के काव्य और सम्पूर्ण साहित्य को देखने पर यही स्पष्ट होता है। उनकी प्रथम कृति 'गुनाहों का देवता' से लेकर उनके काव्य संकलनों तक में यही चीज मुखरित होती दिखाई देती है। उनके काव्य में अनजाने ही अनेक तत्व घुल-मिल गए हैं। ये सब इतनी सहजता से पाठक को अभिभूत करते हैं कि पाठक इनकी दुर्निवार शक्ति के आगे स्वयं को असहाय अनुभव करने लगता है। इससे उसका इन अनुभूतियों के साथ सहज तादात्म्य स्थापित हो जाता है। इन तत्वों में प्रमुख रूप से रूमानियत, दर्द, वेदना, निराशा, अस्तित्ववाद, नैराश्य, पराजय, मृत्युसंत्रास एवं पवित्रता है।

उदासी में सौन्दर्य

छोटी उम्र में ही 'जलपरी' के आकर्षण में बँधे भारती जी के मन पर रूमानियत की छाप ऐसी गहरी है कि उन्हें प्रेमिका की उदासी भी खूबसूरत लगती है :

"तुम कितनी सुन्दर लगती हो
जब तुम हो जाती हो उदास
ज्यों किसी अजनबी दुनिया में सूने खण्डहर के आस-पास
मदभरी चाँदनी लगती हो।"

प्रेयसी के बहुत उदास से चेहरे को वे पीले गुलाब से रूपायित करते हैं :

"बहुत उदास-सा पीले गुलाब-सा चेहरा
हथेलियों में टिका हुआ गुमसुम"

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

दर्द भारती जी के काव्य की दूसरी सबसे बड़ी विशेषता है। टूटन का दर्द एक ऐसा दर्द होता है, जो रचनाकार को अंदर से तराश कर रख देता है। इस दुख-दर्द के माध्यम से, जो उसका स्वयं का होता है, वह सामाजिक सुख-दुख, तक पहुँचाता है। जैसा कि अज्ञेय ने कहा :

"दुख सबको माँजता है,
और चाहे वह स्वयं
किसी को मुक्ति देना ना जाने
किन्तु जिन्हें मांजता है
उन्हें यही सीख देता है कि
वे दूसरों को मुक्त रखें।"

दुख-दर्द की यह गुरूतर भावना स्वयं दुख सहने के पश्चात् ही आती है और कवि "अपने से बाहर की सच्चाई को हृदयंगम करते हुए संकीर्णताओं और कट्टरता से ऊपर एक जनवादी खोज" करता है। भारती जी के काव्य में इस तरह का दुख अधिकांशतः दिखलाई देता है :

"ये फूल, मोमबत्तियाँ और टूटे सपने
ये पागल क्षण
यह कामकाज, दफ्तर-फाइल, उचटा-सा जी
भत्ता वेतन
ये सब सच है"

या कि कवि का दुखी होकर अपनी प्रेयसी से पूछना

"सुनो इतनी अजीब-सी किस्मत
ले के पैदा हुए थे क्यों हम तुम ?"

लेकिन यह दुख-दर्द भारती जी के कवि को तराशकर जनवादी नहीं बना पाया है, अपितु इस अकारण-यातना के दंश के कारण उनका कवि निराश एवं कुंठित हो गया है :

"ठण्डा लोहा! ठण्डा लोहा! ठण्डा लोहा!
मेरी दुखती हुई रगों पर ठण्डा लोहा!
मेरी स्वप्न-भरी पलकों पर
मेरे गीत भरे होठों पर
मेरी दर्द भरी आत्मा पर
स्वप्न नहीं अब
गीत नहीं अब
दर्द नहीं अब
एक पर्त ठण्डे लोहे की।"

पराजय-भाव भी भारती जी की कविताओं में दृष्टिगोचर होता है। यह पराजय प्रेम की पराजय है, जिसने कवि को एकदम जड़, निरूत्साहित और खोखला बना दिया है :

"अपनी मजबूरी से नहीं मन पराजित
अकसर इन पर, तुम पर, सारी दुनिया पर
झल्ला लेती हूँ
निष्क्रिय विद्रोह आदमी को
मन से कितनी जल्दी बूढ़ा बना देता है।"

अस्तित्ववादी दर्शन

अस्तित्वादी-दर्शन का प्रभाव भारती जी की कृतियों में देखने को मिलता है। अस्तित्ववादी स्वयं को दूसरों के सामने नहीं अपितु स्वयं के समक्ष सिद्ध करना चाहते हैं। वे 'अस्तित्व' से प्रामाणिक अस्तित्व की ओर बढ़ते हैं। और इस अवस्था में त्रास, वेदना, दुख, मृत्यु-संत्रास, इत्यादि निराशाजनक अवसादी स्थितियाँ झेलते हैं। भारती जी के काव्य में भी ये सब तत्व दिखलाई पड़ते हैं। कनुप्रिया की 'राधा' हो, अंधा युग का 'अश्वत्थामा-, या ठण्डा लोहा और सात गीत-वर्ष का टूटा हुआ नवयुवक सभी अनास्था के शिकार हैं, और अस्था की खोज में भटक रहे हैं।

"मैं रथ का टूटा पहिया हूँ,
लेकिन मुझको फेंकों मत"

या कि

"सबका दायित्व लिया मैने अपने ऊपर
अपना दायित्व सौंप जाता हूँ मैं सबको"

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भारती जी के काव्य पर वैष्णव दर्शन एवं भारती आशावाद का प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है। कवि ने अपनी प्रेयसी को अपने 'जीवन की भागवत' कहा है। इसी प्रकार वह उसके माथे को भी भगवत-पृष्ठ से तुलना करता है :

"रख दिए नजर में बादलों को साधकर,
आज माथे पर तरल संगीत से निर्मित अधर,
आरती के दीपकों की झिलमिलाती छाँह में,
बांसुरी रखी हुई ज्यों भागवत के पृष्ठ पर"

उत्कट जीजिविषा भी भारती के काव्य की प्रमुख विशेषता है। कवि भाग्यवादी नहीं है, वह मानता है कि नियति (डेस्टिनी) जैसी कोई चीज नहीं है, मानव अपने कर्म द्वारा उसे हर-पल मिटाता-बनाता है :

"पता नहीं
प्रभु है या नहीं
लेकिन उस दिन
हो गया यह सिद्ध
जब कोई भी मनुष्य अनासक्त होकर
चुनौती देता है इतिहास को
उस दिन नक्षत्रों की दशा बदल जाती है,
नियति नहीं है पूर्व निर्धारित -
उसको हर क्षण मानव बनाता-मिटाता है।"

सहजता भारती जी के काव्य की सबसे बड़ी विशेषता है। इसी के साथ-साथ उसमें स्वाभाविकता एवं लयात्मकता भी है। सहजता बातचीत की भाषा की विशेषता है, और जब यह कवि को सिद्ध हो जाती है तब उसकी काव्य-भाषा में स-प्राणता आ जाती है। "धर्मवीर भारती की कविताओं में एक सहजपन है, और यही सहजपन उनकी कविताओं की जान भी है।"

भारती जी की काव्य भाषा गहन संरचनात्मक दृष्टि से भी अत्यंत समृद्ध है। काव्य भाषा की बाह्य संरचना का सरोकार जहाँ ध्वनि, शब्द, रूप और काव्य जैसे भाषिक स्तरों से होता है, वहाँ गहन संरचना में अर्थ-विशेष क्रियाशील होता है। यहाँ कथ्य की साभिप्रायता को अधिबल प्राप्त होता है। शैली, लाक्षणिक अभिक्षण जब वर्णनात्मक स्तर पर काव्य भाषा के सन्दर्भ में सामने आते हैं, तब वे भाषाई वैशिष्ट्य की पहचान मात्र के रूप में उपस्थित होते हैं। पर जब ये ही अभिलक्षण सोद्देश्य और साभिप्राय तौर पर काव्य-भाषा की निर्वचनात्मकता को, उसकी सार्थकता को व्याख्यात्मक स्तर पर रेखांकित करने में सार्थक सिद्ध होते हैं तब उनके जरिये गहन संरचना का शैली वैज्ञानिक प्रमाणन सजीव होने लगता है।

आधुनिकता प्रेम

भारती जी एकमात्र ऐसे कवि है जो जिस गहराई से परंपरा-पोषक हैं, उसी ऊँचाई से आधुनिकता प्रेमी भी। उनकी कृति 'अंधा युग' इस बात की श्रेष्ठ उदाहरण है। 'कनुप्रिया' की राधा एक अलग तरह की राधा के रूप में प्रस्तुत हुई है। और यह राधा के लिए रखी या विलासिनी सा भावुक ही नहीं है अपितु यह चिंतनशील, बौद्धिक और व्यक्तित्वान राधा है। हिन्दी साहित्य में इस तरह की राधा को प्रसतुत करने का श्रेय डॉ. भारती को ही है।

व्यक्तिगत पीड़ा भारती जी के काव्य का सबसे बड़ा एवं महत्वपूर्ण स्रोत रहा है। चाहे वह ठण्डा लोहा हो, सात गीत-वर्ष हो, कनुप्रिया हो या अंधा युग हो, भारती जी का व्यक्तित्व और उनकी व्यक्तिगत पीड़ा भी छलकती, ढलकती रही है। और इस व्यक्तिगत पीड़ा से ही अपनी कविता रचने का परिणाम है कि उनका साहित्य प्राणवान, संवेदनशील और वजनदार बन पड़ा है। उनके साहित्य में मौजूद नाजुकता, रूमानियत, गज़लख्याली भारती जी के व्यक्तित्व की ही

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

विशेषता है। बहुत ही सहजता से भारती जी ने व्यक्तिगत दुख-सुख को स्वीकारा है। और उसे अभिव्यक्त भी किया है।

"मैं और 'कला'
इनकी कुठ भी अहमियत नहीं।
इन दोनों से ज्यादा विराट्
कोई तीसरा सत्य है
जिसको आत्मसात् कर पाने को
मेरी आत्मा यज्ञ शिखाओं में पकती जाती।"

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम यही कह सकते हैं कि भारती जी को प्रकृति ने एक ऐसी संवेदना भेंट दी है, जिसके द्वारा न केवल भारती ने 'युवा-मन की टूटन' को सच्ची शिद्दत से महसूस किया है बल्कि इसे उतनी ही सच्चाई से अपने से बाहर रखा है। इनका काव्य 'स्थगित वयःसंधि' का सबसे प्रमाणित काव्य बनकर सामने है। इनकी वाणी ऋजु, जल सी निर्मल, मणि या उज्जवल, नवस्नात, हिम धवल, तरल और गैरिक वसना रही है। उर्दू, फारसी के शब्दों के प्रयोग ये इन्होंने अपनी कविताओं में ताजगी, मासूमियत और रूमानियत भर दी है। इसी के साथ-साथ यह कहना भी आवश्यक है कि अपने से बाहर की सच्चाई को हृदयंगम करते हुए इन्होंने 'अंधा युग' जैयी अप्रतिम कृति भी हिन्दी-साहित्य को दी है।

संदर्भ ग्रन्थ

(अ) मूल कृतियाँ -
1. ठण्डा लोहा
2. सात गीत - वर्ष
3. अंधा युग
4. कनुप्रिया
5. गुनाहों का देवता
6. सूरज का सातवाँ घोड़ा
7. कहनी - अनकहनी
8. पश्यंती
9. ठेले पर हिमालय
10. नदी प्यासी थी
11. मानव मूल्य और साहित्य
12. देशान्तर

(ब) सहायक ग्रन्थ
1. कनुप्रिया तथा अन्य कृतियाँ, डॉ. ब्रजमोहन शर्मा
2. अंधा युग, डॉ. कथूरिया
3. धर्मवीर भरती का साहित्य : सृजन के विविध रंग, चन्द्रभान सोनवने
4. नए प्रतिनिधि कवि, डॉ. हरिचरण शर्मा
5. भारती की काव्य भाषा, डॉ. पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु'
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी
8. नालंदा विशाल शब्दकोश
9. नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर, डॉ. संतोष कुमार तिवारी
10. द्वितीय सप्तक, सम्पादक अज्ञेय
11. धर्मवीर भारती : साहित्य के विविध आयाम, डॉ. हुकुमचंद राजपाल
12. मधुशाला, बच्चन
13. अंतरा, अज्ञेय

(स) पत्र, पत्रिकाएं
1. धर्मयुग
2. आलोचना
3. निकष
4. ज्ञानोदय
5. सरिका
6. कल्पना